IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सह सम्बन्धात्मक अध्ययन

आशुतोष धर दूबे
डा0 राजकुमार यादव

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्माक अध्ययन करना है। बच्चों के शैक्षिक विकास पर माता–पिता के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने एक समस्या का रूप धारण कर लिया है और खासकर तब जबकि दो तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे आती है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रश्नावली विधि द्वारा प्राप्त आँकडों के आधार पर परिवारों को आर्थिक स्थिति के आधार पर तीन भागों में विभाजित कर –उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग, निम्न आय वर्ग अध्ययन कार्य किया गया है। इसके लिए शोधार्थी ने स्व– निर्मित आर्थिक स्थिति मापनी का प्रयोग किया हैं। शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए उपलब्ध प्रयोज्यों के माता–पिता या अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन करने के लिए व्यक्तिगत प्रश्नावली प्रेषित किया। जिसमें प्रयोज्यों के माता–पिता से उनकी आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर उनके जानकारी प्राप्त किया गया। इस प्रक्रिया से प्रयोज्यों के माता–पिता अथवा अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन किया गया। अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में 600 बच्चों को सम्मिलित कर अध्ययन किया गया और आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त की गयी जो क्रमशः निम्न रही– 160 परिवार उच्च आय समूह, 240 परिवार मध्यम आय समूह और 100 परिवार निम्न आय समूह में पाये गये। इसी तरह स्व–निर्मित शैक्षिक उपलब्धि मापनी का निर्माण कर प्रत्येक आर्थिक स्तर के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को मापा गया है। अध्ययन के लिए तीन शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैं। अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य का प्रयोग कर परिणाम ज्ञात किया गया हैं।

शब्द कुंजी – आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर ।

प्रस्तावना – परिवार की शैक्षिक सामाजिक और आर्थिक स्थिति का बच्चों के शैक्षिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती है। बच्चों के शैक्षिक विकास पर परिवार के वातावरण के साथ–साथ माता–पिता के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने एक समस्या का रूप धारण कर लिया है और खासकर तब जबकि दो तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे आती है। कोई भी परिवार आर्थिक आधार पर सामान्यतः तीन भागों में बटा होता है। उच्च मध्यम एवं निम्न आय वर्गो के माता–पिता की आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनके बच्चों के शैक्षिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के माता–पिता एवं उनके बच्चों की बीच

सम्बन्ध को जानने के लिए शैक्षिक दृष्टिकोण से प्राप्त अंको का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन किया गया है। वाल्यावस्था जीवन की सबसे अनमोल अवस्था होती है। प्रारम्भिक काल में बच्चों को किसी भी चीज की जानकारी स्पष्टरूप से नही होती है। वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु माता–पिता पर निर्भर करते है। माता–पिता का प्रेम और दुलार बच्चो के शैक्षिक विकास पर अनुकूल प्रभाव डालता है। बच्चे माता–पिता की विशेषताओं से प्रभावित होते है। अत्याधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारधारा के प्रवर्तकों में अग्रणी एरिकफ्राम (1947) की यह मान्यता है कि बच्चा समाज में जन्म लेता है और विकसित होता है। माता–पिता और बालकों के सम्बन्धों एवं बालक के शैक्षिक विकास पर परिवार के आर्थिक स्थिति का काफी प्रभाव पड़ता है।

उच्च आय वर्ग के माता–पिता की आर्थिक स्थिति सही होने के कारण उनके बच्चों का शैक्षिक विकास बहुत ही अच्छी तरह से होता है। मध्यम वर्गीय माता–पिता को अपने बच्चों से अनेक प्रकार की अपेक्षाएं होती है। दोनों के बीच आर्थिक स्थिति का प्रभाव निश्चित रूप से पाया गया है। अतः बच्चों के विकास पर परिवार के वातावरण के साथ–साथ माता–पिता के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण निम्न वर्गीय माता–पिता अपने बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते है इससे बच्चों की शैक्षिक विकास प्रभावित होता है। निम्न वर्गीय परिवारों में बच्चों की अधिक संख्या भी इस मनोवृत्ति के पनपने का कारण है क्योंकि अधिक बच्चों की देखभाल करना किसी भी माता–पिता के लिए सम्भव नहीं हो पाता है।

भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने एक समस्या का रूप ले लिया है और खासकर तब जबकि दो तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते है इस परिस्थिति में ऐसे परिवार चार, पांच एवं उससे अधिक बच्चों के समुचित लालन पालन की जिम्मेदारी निभा पाने में असमर्थ होते है।

कोई भी समाज आर्थिक आधार पर तीन भागों में बंटा है। भारतीय समाज भी आर्थिक स्थिति के आधार पर अति प्राचीन समय से तीन भागों में बंटा हुआ है–उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग, निम्न आय वर्ग, भारत में इन तीनों श्रेणियो के लोग समाज में एक साथ रहते है लेकिन उनकी मान्यताएं व्यवहार प्रणाली रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, तथा विचार प्रणाली उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर भिन्न–भिन्न है। इन तीनों ही वर्गो का शिक्षा–दीक्षा भी स्पष्ट रूप से तथा पृथक–पृथक रही है।इसके अतिरिक्त तीनों वर्गो की सुविधाएं भी समान नहीं रहती है। निम्न आय वर्ग के माता–पिता की आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण उनके बच्चों का शैक्षिक विकास नहीं हो पाता है।

निम्न आय वर्ग निश्चित रूप से समाज में कष्ट सहता है निम्न आय वर्ग सामाजिक रचना के कारण अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई तथा भरण–पोषण की समुचित व्यवस्था भी नहीं कर पाता है। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन तीनो वर्गो की सामाजिक समस्याओं के प्रति भी दृष्टिकोण अलग–अलग होता है। साथ ही आधुनिक समाज शास्त्रियों का यह भी विचार है कि सम्भवतः वर्तमान समस्या बालक अभिभावक सम्बन्ध का ही परिणाम है। इस सन्दर्भ में यह परिकल्पना स्थापित की जाती है कि उच्च आय र्व के माता–पिता की आर्थिक स्थिति सही होने पर उनके बालकों के शैक्षिक विकास का माध्यम एवं निम्न आय वर्ग के माता–पिता एवं बालकों के शैक्षिक विकास में अधिक अनुकूल सम्बन्ध पाया जायेगा। सामाजिक आर्थिक स्थिति को विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न तरीके से परिभाषित किया गया है।

कैप्टिन के अनुसार– ''आर्थिक स्थिति वह स्थिति है जिसमें एक परिवार का सदस्य सांस्कृतिक अधिकारों में प्रचलित औसत स्तर तथा समुदाय की सामूहिक प्रतिक्रियाओं में भाग लेने के सन्दर्भ में प्राप्त करता है, यही उसकी सामाजिक आर्थिक स्थिति हैं।''

कुप्पू स्वामी के अनुसार– ''सामाजिक आर्थिक स्तर तथ्यों को प्राथमिकता प्रदान करता है, माता–पिता का व्यवसाय माता–पिता की आय, माता–पिता की शिक्षा आदि। इन्हीं तीन तथ्यों के आधार पर परिवार का स्तर उच्च एवं निम्न रहता है।''

शिक्षा का उद्देश्य है छात्र की अन्तर्निहित शक्तियों का अधिकतम विकास करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षण प्रक्रिया के आयोजन किये जाते है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र ने किस सीमा तक अपनी शक्तियों और योग्यताओं का विकास किया है यह उसकी शैक्षिक उपलब्धि का प्रतीक है।

शैक्षिक उपलब्धि छात्रों द्वारा अर्जित, ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रा तक अभिव्यक्ति है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया द्वारा छात्रगण अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास करता है। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास किया है। यही उनके सम्प्राप्ति का सूचक है। विद्यालय के पाठ्यक्रम का कोई भी विषय क्यों न हो उससे सम्बन्धित शिक्षण अधिगम सदैव ही उस विषय के लिए निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहते है। यही बात विषयों के शिक्षण अधिगम के लिए भी लागू होता है यहां तक की सभी विषयों के अध्यापक भी कक्षा विशेष के लिए निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहते है। अपने इन प्रयासों के दौरान उसे यह जानने की उत्सुकता हर समय बनी रहती है कि उसके प्रचल किस दिशा में जा रहे है और उसके फलस्वरूप उसे निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कितनी और किस रूप में सफलता मिलती है।

यह जानकारी उसे अपने प्रयासों को सही दिशा में लगाने में सहयोग प्रदान करती है। इस प्रकार की जानकारी उसे तभी प्राप्त होती है जबकि वह जाने कि उसके शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थियों को क्या कुछ उपलब्ध हो रहे है तथा उसके व्यवहार मे किस प्रकार का अपेक्षित परिवर्तन हो रहा है। इस कार्य में यहा उनकी सहायता सूचनाएं एवं आंकड़े करते है जिसकी प्राप्ति उसे अपने विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का व्यवहार परिवर्तन का परीक्षण करने मापने एवं मूल्यांकन के द्वारा होती है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों में अर्जित ज्ञान की परीक्षा होती है। इससे यह जानकारी प्राप्त होती है कि विद्यार्थी ने क्या और कितना सीखा है और किस क्षमता से कार्य सम्पन्न हुआ है। उपलब्धि के अंकन द्वारा विद्यालय के अन्दर और बाहर प्राप्त ज्ञान को शिक्षण व अनुभव के आधार पर दिखाई पड़ता है।

गैरीसन के अनुसार– ''निष्पति परीक्षा बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है।''

माथुर के अनुसार – ''निष्पति परीक्षण एक निश्चित कार्य क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसकी माप करता है।''

अतः शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता है या उसके विशिष्ट क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा को प्रदर्शित करता है क्योंकि विद्यालय में अनेको प्रकार के छात्र/छात्राएं ग्रहण करने के लिए आते है, जिनकी शैक्षिक उपलब्धि भिन्न–भिन्न होती है। यह उनके सीखने तथा अनुभव प्राप्त करने की शक्ति पर निर्भर करता है।

शोध की आवश्कता – परिवार की आर्थिक स्थिति का बच्चे के शैक्षिक विकास पर प्रभाव डालता है या कह सकते हैं बच्चों के शैक्षिक विकास पर परिवार के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने इस समस्या को और व्यापक स्वरूप दे दिया है। शोधार्थी द्वारा इस समस्या के चयन और इस शोध कार्य का उद्देश्य उच्च आय वर्ग एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, मध्यम आय वर्ग एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न आय वर्ग एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच क्या सम्बन्ध है को जानना है। बच्चों के विकास मे माता–पिता के स्थिति की अहम भूमिका पायी जाती है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

आर्थिक स्थिति – आर्थिक स्थिति अर्थात किसी व्यक्ति की वित्तीय स्थिति से है जिसमें उसका कार्य, क्रय शक्ति एवं बचत आदि सम्मिलित होता है बालक के शैक्षिक वातावरण पर इसका प्रभाव अन्य कारकों की ही तरह विस्तृत रूप से पड़ता है। मुख्यतः यह स्तर पिता के आय पर निर्भर करता है ।

एस0 जलोटा, आर0एम0पाण्डेय, डी कपूर एवं आर0एन0सिंह के अनुसार –आर्थिक स्थिति को निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर बताया गया है–

- पिता या संरक्षक का व्यवसाय।
- पिता या संरक्षक और भाई बहिनों की शिक्षा
- परिवार की आय, घर का आकार, गृह उपकरण।
- अखवार, मैगजीन पर किया गया खर्च।
- महलकांक्षा स्तर को आत्म प्रत्यय।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता है या उसके विशिष्ट क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा को प्रदर्शित करता है। **प्रेसी रॉक्सिन व हारम्स** के कथनानुसार शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप तथा सीमा का माप करने के लिए किया जाता है।

शोध का उद्देश्य–

किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया है–''भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्धात्मक अध्ययन करना।''

शोध की परिकल्पनाए – परिकल्पना अनुसंधान प्रक्रिया का एक आवश्यक चरण है इसके अभाव मे अनुसंधान प्रक्रिया उद्देश्यहीन हो जाता है। किसी समस्या के समाधान के लिए सम्भावित विकल्प ही परिकल्पना है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक विधि के अनुसंधान सम्भव है। अतः प्रस्तुत अध्ययन को वैज्ञानिक रूप देने तथा समस्या के हल के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी है–

1– उच्च आय एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सम्बन्ध नही होता है।
2– मध्यम आय एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सम्बन्ध नही होता है।
3– निम्न आय एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

शोध का परिसीमन– समय, धन एवं मापन यन्त्र की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य को निम्नलिखित सीमाओं के अन्तर्गत किया गया है– प्रस्तुत शोध में भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन कर उनकी आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन किया है।

शोध में प्रयुक्त विधि –प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक, सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श का चयन – अनुसंधानकर्ता अपने शोध के लिए जनसंख्या से निश्चित संख्या में से कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है जिसमें सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताएं समाहित हो तथा ये सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता हो। इस चयनित संख्या को ही व्यवहारपरक अनुसंधान में न्यायदर्श कहे जाते है तथा न्यादर्श चयन करने की प्रविधि को न्यादर्शन या प्रतिदर्शन कहा जाता है।

उपर्युक्त जनसंख्या के न्यादर्श शोधकर्ता के द्वारा अपने शोध उद्देश्य भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन को जानने के लिए उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया है। इस चयन के लिए शोधकर्ता 10 (दस) माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा 11 के 600 अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का चयन रैण्डम विधि द्वारा किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण– उपकरण के रूप में शोधार्थी ने स्व– निर्मित आर्थिक स्थिति मापनी तथा स्व–निर्मित शैक्षिक उपलब्धि मापनी का निर्माण कर प्रत्येक आर्थिक स्तर के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को मापा है।

सांख्यिकीय विधियाँ – शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में ऑकड़ो के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है।

मध्यमान–

$$M = AM + \frac{\Sigma fdx}{N} \times i$$

जहां
- M= मध्यमान
- AM= कल्पित माध्य
- N= प्रवृत्तियों का योग
- i= वर्गान्तर प्रसार
- f= आवृत्तियां
- dx= कल्पित माध्यम से दूरी

प्रमाणिक विचलन

$$S.D. = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fx^2}{N} - \frac{(\Sigma fx)^2}{(N)^2}}$$

जहां SD= प्रमाणित विचलन
Σfx^2= आवृत्ति तथा विचलन के वर्गो का योग
Σfx = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का योग
N= प्राप्तांकों की संख्या

टी–मूल्य की गणना–

$$t = \frac{M_1 \quad M_2}{\sigma_D}$$

जहां σ_D = प्रमाणित विचलन त्रुटि
t = मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का मान
M_1 = प्रथम श्रेणी का मध्यमान
M_2 = द्वितीय श्रेणी का मध्यमान

प्रमाणित विचलन त्रुटि

$$\sigma_D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N} + \frac{\sigma_2^2}{N}}$$

जहां σ_D = प्रमाणित विचलन त्रुटि
σ_1^2= पहले न्यायदर्श के मानक विचलन का वर्ग
σ_2^2 = दूसरे न्यायदर्श के मानक विचलन का वर्ग
N_1= प्रथम श्रेणी के सदस्यों की संख्या
N_2= द्वितीय श्रेणी के सदस्यों की संख्या

स्वतन्त्रता की कोटि

$$df = N_1 + N_2 - 2$$

जहां N_1= प्रथम श्रेणी के प्राप्तांकों की संख्या
N_2 = द्वितीय श्रेणी के प्राप्तांकों की संख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या– शोध प्रक्रिया शोधकर्ता द्वारा किये गये कार्य सभी प्रतिविम्बित होते है। प्रदत्तों का संकलन वर्गीकरण व सारणीयन करने के पश्चात उनके विश्लेषण एवं व्याख्या किये जाते है जिससे शोध कार्य के वाछित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकें। प्रदत्तों का विश्लेषण सांख्यिकी विधि से किये जाते है।

शोधार्थी ने भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र छात्राओं और ग्रामीण छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में लिये गये 600 छात्र–छात्राओं को उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर तीन वर्गो उच्च आय, मध्यम आय, और निम्न आय वर्गो में बॉटकर अध्ययन किया और विद्यार्थियो की आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिये स्वनिर्मित आर्थिक स्थिति प्रश्नावली का प्रयोग किया है प्रश्नावली से प्राप्त ऑकड़ों का गणना एवं विश्लेषण करने के बाद विद्यार्थियों के क्रमशः 160 परिवार उच्च आय समूह में पाये गये और 240 परिवार मध्यम आय समूह में पाये गये और 100 परिवार निम्न आय समूह में पाये गये।

इन तीनों ही से सम्बन्धित अध्ययन कर प्राप्तांकों का वितरण तथा उनके मध्यमान प्रमाणिक विचलन तथा टी0 अनुपात का तुलनात्मक विवेचन सारणी संख्या–1 में उल्लिखित है।

सारिणी संख्या–1

भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों उच्च मध्यम निम्न आय वर्गो के माता–पिता की आर्थिक स्थिति एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्ध का परिगणित मूल–

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–अनुपात		सार्थकता स्तर
उच्च समूह आय	160	27.66	7.35	क–ख	8.33	सार्थक
मध्यम आय समूह	240	44.15	14.33	ख–ग	1.83	सार्थक
निम्न आय समूह	100	38.30	16.02	क–ग	3.20	सार्थक

व्याख्या –सारिणी संख्या–1 से वर्णित तीनों ही आय समूहों के सांख्यिकीय परिणामों के तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च आय समूह के माता पिता एवं उनके बच्चों के बीच शैक्षिक दृष्टिकोण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 27. 66 मध्यम आय समूह से प्राप्त मध्यमान 44.15 और निम्न आय से प्राप्त मध्यमान 38.30 प्राप्त हुआ है। तीनों ही समूहों के पृथक–पृथक तुलना से यह स्पष्ट होता है कि उच्च एवं निम्न आय समूह के बीच मध्यमानों का टी अनुपात 3.20 पाया गया है जो प्रावकल्पना के अनुरूप 0.01 स्तर पर सार्थक सत्यापित हो रहा है। उच्च एवं मध्यम आयश के बीच मध्यमानों का टी अनुपात 8.33 पाया गया है जो प्राक्कल्पना के विपरीत दिशा में सत्यापित हो रहा है। मध्यम एवं निम्न आय समूह के बीच मध्यमनों का टी अनुपात 1.83 पाया गया है जो प्राक्कल्पना के अनुरूप 0.01 स्तर पर सार्थक स्थापित हो रहा है।

इस तरह गणनोपरान्त शोधार्थी ने पाया कि उच्च आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित परिणाम 0.05 स्तर पर सार्थक है। इसलिए शून्य परिकल्पना बच्चों की उच्च आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध नहीं है। निरस्त की जाती है। अर्थात परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। जो प्रायः यह देखा गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होती है फिर शोधार्थी ने मध्यम आय समूह और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन किया प्राप्त परिणाम 0.05 पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना विद्यार्थियों के मध्यम आय समूह और शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध नहीं है। निरस्त होती है पुनः शोधार्थी ने निम्न आय समूह और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन किया परिणाम सार्थक रहा जिससे स्पष्ट होता है कि परिवार का निम्न आय बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

परिणाम और निष्कर्ष – शोध के बाद परिणाम और निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण हो या शहरी सभी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है लेकिन उनमें से कूछ की नही होती कुछ बच्चे ऐसे भी होते है कि उनमें ज्ञान के प्रति जिज्ञासा है ज्ञान प्राप्त करने की ललक है, पढ़ने में उनकी रूचि है तो आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उतना प्रभावित नहीं करता।

आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे भी पढ़–लिखकर विभिन्न विभागों में उच्च पदों पर कार्यरत है या अच्छे व्यवसायी है या एक अच्छे समाजसेवक है आदि।

उपसंहार – शोध पत्र के अध्ययन का मूल उद्देश्य भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्यम सहसम्बन्ध है शोधकार्त द्वारा शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों का चयन करके उनके 6000 शहरी छात्र छात्राओं एवं ग्रामीण छात्र–छात्राओं की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा भदोही जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करने के लिए व्यक्तिगत प्रश्न पत्र उपकरण मापनी का प्रयोग किया।

शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए उपलब्ध प्रयोज्यों के माता–पिता या अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन करने के लिए प्रतिदर्श के रूप में व्यक्तिगत प्रश्न पत्र प्रेशित किया गया जिसमें प्रयोज्यों छात्र छात्राओं से उनकी आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर उनके जानकारी प्राप्त किया गया। इस प्रक्रिया से प्रयोज्यों के माता पिता अथवा अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन किया गया। जिनका वर्गीकरण उच्च मध्यम और निम्नर वर्ग के रूप में किया गया। आय वर्ग के विभाजन हेतु माता–पिता के मासिक आय को आधार बनाकर विभाजक सीमाएं क्रमशः उच्च आय कवर्ग 20000 उवं उससे उपर मध्यम आय वर्ग 10000 से 20000के बीच एवं निम्न आय वर्ग 3000 एवं उससे उपर किया गया। इन तीनों ही आय वर्गो के माता–पिता एवं उनके बच्चे बच्चियों के उपर शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में स्थापित प्राक्कल्पनाप की चर्चा उपर किया गया है।

माता–पिता अभिभावक एवं बच्चों के बीच जो आपसी सम्बन्ध उच्च आय वर्ग में मध्यम एवं निम्न आय वर्ग की अपेक्षा अधिक अनुकूल माता पिता एवं बालक के सम्बन्ध पाये गये। माता पिता अभिभावक एवं बच्चों के बीच जो आपसी सम्बन्ध विकसित होता है उसका प्रभाव निश्चित रूप से उनके समायोजन की दशा का निर्धारक होता है। बच्चों के विकास में माता–पिता की अहम भूमि पायी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जे0सी0 (1956) एजुकेशन रिसर्च एंड इंट्रोडक्शन, नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो।

2. अग्निहोत्री, आर0 (2013) आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्या एवं समाधान जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी

3. अंशु, मंगल (2008). शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगरा : विनोद पुस्तक मंदीर।

4. चौहान, आर0 (2015). एजुकेशनल साइकोलॉजी एंड स्टैटिसटिक्स, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।

5. दास, अल्का (2012). बीएड प्रशिक्षणार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का सृजनत्मकता दुश्चिंता व शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध पीएचडी स्तर शोध गुवाहाटी विश्वविद्यालय असम

6. कपिल, एच0के0 (2007). अनुसंधान विधियां, आगरा : एचपी भार्गव बुक हाउस